Note : If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – www.jainelibrary.org and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

Jinvallabhsuri Granthavali

Folder No.	002681
Granth Name	Jinvallabhsuri Granthavali
Author	Vinaysagarji
Publisher	Prakrit Bharati Academy – Jaipur
Edition	1
Year	2004
Pages	398

जिनवल्लभसूरि ग्रन्थावलि

फोल्डर नं.	००२६८१
ग्रन्थ	जिनवल्लभसूरि ग्रन्थावलि
लेखक	म. विनयसागरजी
प्रकाशक	प्राकृत भारती एकेडमी – जयपुर
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	२००४
पृष्ठ	३९८

मुख्य टाईटल
समर्पण
प्रकाशकीय
विषय – सूची
किञ्चिद् वक्तव्यम्
प्रस्तावना ---------- १-५०
ग्रन्थावलिगत चित्रकाव्य ---------- i-x
सूक्ष्मार्थविचारसारोद्धारप्रकरणम ---------- १-१३
आगमिकवस्तुविचारसारप्रकरणम ---------- १४-२१
सर्वजीवशरीरावगाहनास्तव ---------- २२
पिण्डविशुद्धिप्रकरणम ---------- २३-३१
श्रावकव्रतकुलकम ---------- ३२-३४
पौषधविधिप्रकरणम ---------- ३५-४५
प्रतिक्रमण – समाचारी ---------- ४६-४९

स्वप्नसप्तति -- ५०-५५
द्वादशकुलकानि -- ५६-७८
धर्मशिक्षाप्रकरण --- ७९-८६
सङ्घपट्टक -- ८७-९३
श्रृङ्गारशतकाव्यम --- ९४-११२
प्रश्नोत्तरैकषष्टिशतकाव्यम -- ११३-१३८
चित्रकूटीय वीरचैत्य प्रशस्ति (अष्टसप्तति) -- १३९-१४९
चित्रकूटीय – पार्श्वचैत्य – प्रशस्ति--- १५०
आदिनाथचरितम --- १५१-१५३
शान्तिनाथचरितम -- १५४-१५६
नेमिनाथचरितम -- १५७-१५८
पार्श्वनाथचरितम --- १५९-१६०
महावीरचरितम --- १६१-१६४
वीर – चरित्र (जय भववण) -- १६५-१६६
चतुर्विंशति – जिन – स्तुतय (मरुदेविनाभितणयं) ------------------------------------- १६७-१७५
चतुर्विंशति जिन स्तोत्राणि (भीमभव) --- १७६-१८९
नंदीश्वर – चैत्य – स्तव -- १९०-१९२
सर्वजिन – पञ्चकल्याणक – स्तोत्रम (सम्मं नमिउण) -------------------------------- १९३-१५५
सर्वजिन – पञ्च – कल्याणक – स्तोत्रम (पणयसुर) -- १९६
महाभक्तिगर्भा सर्वज्ञविज्ञप्तिका (लोयालोय) -- १९७-२००
प्रथम – जिन – स्तवनम (सयलभुवणिक्क) -- २०१-२०५
लघु – अजित – शान्ति – स्तवनम --- २०६-२०८
स्तम्भन – पार्श्वजिन – स्तोत्रम (सिरिभवण) -- २०९
क्षुद्रोपद्रवहरपार्श्वजिन – स्तोत्रम (नमिरसुरासुर)-- २१०-२११
महावीर – विज्ञप्तिका (सुरनरवर)--- २१२-२१३
महावीरस्वामिस्तोत्रम (भावारिवारण – स्तोत्र) -- २१४-२१९
सर्वजिनेश्वरस्तोत्रम (प्रितिप्रसन्न) --- २२०-२२२
पञ्चकल्याणकस्तोत्रम (प्रितिद्वात्रिंश) -- २२३-२२५
कल्याणकस्तोत्रम (पुरन्दपुर) -- २२६
पार्श्वनाथ – स्तोत्रम (नमस्यदगीर्वाण) --- २२७-२३२
पार्श्वनाथस्तोत्रम (पायात्पार्श्व) --- २३३-२३४
पार्श्वनाथस्तोत्रम (देवाधीश) --- २३५-२३६
स्तम्भन – पार्श्वनाथ –स्तोत्रम (समुधन्तो) --- २३७-२४१
स्तम्भन –पार्श्वनाथ स्तोत्रम (विनयविनमद) --- २४२-२४४
स्तम्भन – पार्श्वनाथ – स्तोत्रम चित्रकाव्यात्मकम (शक्तिशूलेषु) ----------------------------- २४५

स्तम्भन – पार्श्वनाथ – स्तोत्रम चक्राष्टकम (चक्रे यस्य नति)------------------------------ २४६-२४७
सरस्वती – स्तोत्रम (सरभसलसद) -- २४८-२५२
नवकार – स्तोत्रम (किं किं कप्पतरु) -- २५३-२५६
परिशिष्ट
जिनवल्लभसूरिग्रन्थावलिगत – ग्रन्थानां छन्दोनुक्रमणी --------------------------------- २५७-२६२
जिनवल्लभसूरिग्रन्थावलिगत – ग्रन्थानां पधानुक्रमणी ----------------------------------- २६३-२९७
महावीरस्वामी स्तोत्र (भावारिवारण) अन्त्यपादपूर्तिरुप महावीर – स्तोत्र ----------------- २९८-३००
युगप्रधान जिनदत्तसूरि प्रणीत ग्रन्थों में जिनवल्लभसूरि – गुणवर्णन -------------------- ३०४-३१२
स्व. नेमिचन्द्र भण्डारी रचित जिनवल्लभसूरि – गुरुगुणवर्णन -------------------------- ३१३-३१५
५१ ग्रन्थकारों के ग्रन्थों में जिनवल्लभसूरि स्तुत्यात्मक – पध ------------------------- ३१६-३२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org